सर्वाधिकार सुरक्षित
COPYRIGHT RESERVED

JAC

क्रमांक 022611

Usha Kumari 02·03·16
वीक्षक का पूर्ण हस्ताक्षर

प्रश्न सह उत्तर पुस्तिका

केन्द्राधीक्षक
केन्द्राधीक्षक का पूर्ण हस्ताक्षर
टाटीसिलवे, राँची

1. पंजीयन सं. (Reg.No.) 11023-02818-14

2. पंजीयन वर्ष (Reg.Year) 2014

3. रौल कोड (Roll Code.) 11023

4. रौल नं० (Roll No.) 0223

5. लिपि (Script) Devnagri

6. तिथि (Date) 02-03-2016

2016 (A)

हिन्दी (ए)

१६ फरवरी, 2016

प्रथम पाली

HINDI (A)

16th FEBRUARY, 2016

FIRST SITTING

प्रश्न सं.	प्राप्तांक दहाई	प्राप्तांक इकाई	प्रश्न सं.	प्राप्तांक दहाई	प्राप्तांक इकाई
1	1	1	10	0	6
2	0	8	11	0	7
3	0	8	12	0	4
4	0	5	13	0	6
5	0	3	14	0	9
6	0	3	15	0	5
7	0	3	16	0	3
8	0	3	17	0	6
9	0	3	×		
×	×	×	×	×	×
योग (क)	4	7	योग (ख)	3 4	6 6

कुल प्राप्तांक = योग (क) + योग (ख)

अंकों में 80 93

शब्दों में अस्सी तिरानबे

प्रधान परीक्षक का पूर्ण हस्ताक्षर
(Full Signature of Head Examiner)

कोड नं० ....

परीक्षक का पूर्ण हस्ताक्षर
(Full Signature of Examiner)

कोड नं० 05

प्रेम रंजन (स० शि०)
डी० पी० एल० एम० उ० +2 ...
नवागढ़, धनबाद

JAC

महत्वपूर्ण एवं आवश्यक निर्देश

परीक्षार्थियों के लिए

1. परीक्षा भवन में प्रश्न सह उत्तर पुस्तिका मिलते ही स्पष्ट रूप से अच्छी लिखावट में अपने प्रवेश पत्र में अंकित रौल कोड (Roll Code), रौल नं० (Roll No.) एवं अन्य वांछित सूचनाएं प्रश्न सह उत्तर पुस्तिका के आवरण पृष्ठ पर लिखें।
2. परीक्षा भवन में प्रवेश पत्र एवं निर्दिष्ट उपकरणों के अतिरिक्त कोई दूसरे कागजात एवं सामान अगर शारीरिक तलाशी के समय पाया जायेगा, तब तत्क्षण परीक्षा से निष्कासित कर दिया जावेगा।
3. किसी भी परिस्थिति में प्रश्न सह उत्तर पुस्तिका परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दंडनीय है। इसे परीक्षा समाप्ति के बाद लौटाया जाना आवश्यक एवं अनिवार्य है।
4. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर प्रश्न के नीचे उत्तर के लिए उपबंधित रिक्त स्थान में ही दें।

वीक्षकों के लिए

1. परीक्षा समाप्ति के उपरांत परीक्षार्थियों से प्रश्न सह उत्तर पुस्तिकाएं लेने के पूर्व सुनिश्चित हो लें कि परीक्षार्थी द्वारा प्रश्न सह उत्तर पुस्तिका के आवरण पृष्ठ पर सभी सूचनाएं यथा निर्दिष्ट स्थान पर अंकित किये गये हैं या नहीं। अगर नहीं तो उसे परीक्षार्थी से तुरंत अंकित करवा लें।
2. जब तक परीक्षा समाप्ति की घंटी नहीं बजती है और सभी प्रश्न सह उत्तर पुस्तिकाएं एकत्र नहीं कर ली जाती हैं, तब तक किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा भवन से बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जाय।
3. प्रश्न सह उत्तर पुस्तिकाओं पर वीक्षक यथा निर्दिष्ट स्थान पर अपना पूर्ण हस्ताक्षर करें एवं तिथि अंकित करें।

परीक्षकों के लिए

1. प्रत्येक प्रश्न संख्या के सामने दो खाने प्रश्न सह उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर दिये हुए हैं। एक में प्राप्तांक की इकाई और दूसरे में प्राप्तांक की दहाई का अंक अंकित करना है। उदाहरण के लिए अगर प्रश्न संख्या 1 में 12 अंक मिलते हैं, तो प्रश्न 1 के सामने इकाई के खाने में 2 अंक एवं दहाई के खाने में 1 अंक लिखें, यथा [1][2]. अगर किसी प्रश्न में 4 अंक प्राप्त होते हैं, तो इकाई में 4 अंक और दहाई में 0 अंक अंकित करें, यथा [0][4]। उसी प्रकार अगर किसी प्रश्न में शून्य अंक प्राप्त होते हैं, तो इकाई एवं दहाई दोनों के खाने में शून्य एवं शून्य अंकित करें, यथा [0][0]।
2. एक प्रश्न के भिन्न-भिन्न खण्डों का प्राप्तांक जोड़कर उसी प्रश्न के लिए आवंटित स्तम्भ में अंकित करें।
3. जो प्रश्न हल नहीं किये गये हों, उस प्रश्न संख्या के सामने मुख पृष्ठ के दोनों खाने क्रॉस (×) कर दिये जायँ।
4. जिस प्रश्न के उत्तर नही दिये गये हैं, उसके उत्तर के लिए उपबंधित रिक्त स्थान को क्रॉस (×) कर दें।
5. उत्तर के मूल्यांकन के पश्चात प्रत्येक पृष्ठ पर प्राप्तांक उत्तर की बायें तरफ हाशिये में अंकित करें।

कुल प्रश्नों की संख्या : *Total No. of Questions :*	17	पृष्ठों की कुल संख्या : *Total No. of Pages :*	32
समय : 3 घंटे Time : 3 Hours		पूर्णांक : Full Marks :	100
		उत्तीर्णांक : Pass Marks :	33

सामान्य निर्देश :
GENERAL INSTRUCTIONS :

(1) परीक्षार्थी यथासंभव अपनी ही भाषा-शैली में उत्तर दें।

(2) इस प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं यथा **क, ख, ग** एवं **घ** । चारों खण्डों से **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

(3) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने उपांत में अंकित हैं ।

(4) प्रश्नों के उत्तर प्रश्नों के साथ दिये गये निर्देश के आलोक में ही लिखें ।

(5) 1 अंक के प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक एक शब्द या एक वाक्य में, 2 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 40 शब्दों में, 3 अंक के प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 60 शब्दों में, 4 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 80 शब्दों में, 5 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 100 शब्दों में एवं 10 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 200 शब्दों में लिखें।

खण्ड - क

1. नीचे दिये गये गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

भारतवर्ष बहुत पुराना देश है । उसकी सभ्यता और संस्कृति भी बहुत पुरानी है । भारतवासियों को अपनी सभ्यता और संस्कृति पर बड़ा गर्व है । वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा प्राप्त नए साधनों को अपनाते हुए भी जब अनेक अन्य देशवासी अपने पुराने रहन-सहन और रीति-रिवाज को बदलकर नए तरीके से जीवन बिताने लगे तब भी भारतवासी अपनी पुरानी सभ्यता और संस्कृति पर डटे रहे और बहुत काल तक यह देश ऋषि-मुनियों का देश ही कहलाता रहा । विश्व के मानव-जीवन के उस नए दौर का असर पूर्ण रूप से भारतवासियों पर पड़ा नहीं ।

हवाई जहाज की सैर की सुविधा के मिलने के बाद भी पैदल की जाने वाली तीर्थ यात्राएँ होती ही रहीं । पाँच नक्षत्र वाले होटलों में 'शावर बाथ' की सुविधाओं के होते हुए भी गंगा-स्नान और संध्या-वंदन का दौर चलता ही रहा । कारण यह है कि जब जीवन में उन्नति के लिए अन्य देशवासी नए आविष्कारों और उनके द्वारा प्रदान की गई सुविधाओं के पीछे भाग रहे थे, तब भी भारतवासियों का अपने रीति-रिवाज और रहन-सहन पर पूरा विश्वास था और संपूर्ण रूप से नए आविष्कारों का शिकार होना नहीं चाहते थे । इसका कारण यह भी था कि विज्ञान के आविष्कारों के नाम से जीवन को आसान बनवाने वाली सुविधाओं को अपने देहाती ढंग से प्राप्त करके जीने का तरीका प्राचीन काल से भारतवासी जानते थे ।

इसी भाँति छोटी क्षेत्रफल वाली जमीन को जोतने की बात तो अलग है । पर आज ट्रैक्टरों का इस्तेमाल करके विशाल क्षेत्रफल वाली भूमि को भी थोड़ी ही देर में आसानी से जोत डालने की सुविधा तो है । इसका मतलब यह नहीं था कि हमारे पूर्वज इस प्रकार की सुविधाओं के अभाव से विशाल क्षेत्रफल वाली भूमि को जोतते ही नहीं थे । उस जमाने में भी उस समय पर प्राप्त सामग्रियों का इस्तेमाल करके विशाल से विशाल भूमि को भी जोत डालते ही थे । ऐसी विशाल जमीन के चारों ओर सबसे पहले एक छोटे-से द्वार मात्र को छोड़कर आट लगाते थे । पूरी जमीन पर जंगली पौधे अपने आप उग लेंगे ही । फिर सिर्फ एक रात्रि के लिए जमीन पर जंगली सूअरों को भगाकर द्वार बंद कर देते थे । पौधों की जड़ को खाने के उत्साह से जंगली सूअर जमीन

खोदने लगेंगे । सुबह देखने पर पूरी जमीन जोतने के बराबर हो जाएगी । बाद में सूअरों को भगाकर जमीन समतल कर लेते थे और खेतीबारी करते थे । उस कार्य के पीछे विज्ञान का नाम मात्र न था। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि ट्रैक्टर नाम के इस नए आविष्कार के प्रेरक तो जंगली सूअर ही थे । कहने का तात्पर्य यह है कि प्राकृतिक साधनों का पूरा फायदा उठाना हमारे पूर्वज खूब जानते थे ।

प्रश्न (क) इस गद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए । 1

(ख) भारतवासियों को किस पर बड़ा गर्व है ? 1

(ग) बहुत काल तक यह देश क्या कहलाता रहा ? 1

(घ) आज भी तीर्थ-यात्राएँ किस प्रकार संपन्न की जाती हैं ? 1

(ङ) पाँच नक्षत्र वाले होटल से क्या तात्पर्य है ? 1

(च) 'शावर बाथ' का क्या अर्थ है ? 1

(छ) अपने देहाती ढंग से प्राप्त करके भारतवासी क्या जानते थे ? 1

(ज) ट्रैक्टर के आविष्कार के प्रेरक कौन थे ? 1

(झ) ट्रैक्टर के आने से पूर्व भारतवासी अपनी विशाल धरती को किनकी सहायता से जोतते थे ? 1

(ञ) 'देश' का पर्यायवाची शब्द लिखिए । 1

(ट) 'भारतवासी' कौन समास है ? 1

(ठ) 'अत्युक्ति' का क्या अर्थ है ? 1

उत्तर

(क) भारत की अटूट सभ्यता वो संस्कृति।

(ख) भारतवासियों को अपनी सभ्यता और संस्कृति पर बड़ा गर्व है।

(ग) बहुत काल तक वह देश ऋषि-मुनियों का देश कहलाता रहा।

(घ) आज भी तीर्थ-यात्राएँ पैदल ही की जाती हैं।

(ङ) पाँच नक्षत्र वाले होटल से तात्पर्य काफी महँगे होटलों से है जहाँ लोग घर की तरह रह सकते हैं।

(च) शावर बाथ का अर्थ है - बड़े बड़े होटलों एवं मकानों में स्नानगृह में झरनों में पानी की बौछार में नहाना।

(छ) भारतवासी जीवन को आसान बनाने वाली सुविधाओं को अपने देहाती ढंग से प्राप्त करके जीने का तरीका जानते थे।

(ज) ट्रैक्टर के आविष्कार के प्रेरक बंगाली सूअर थे।

(झ) ट्रैक्टर के आने से पूर्व भारतवासी अपनी विशाल धरती को जंगली सूअरों की सहायता से जोतते थे।

(ञ) देश का पर्यायवाची शब्द – राष्ट्र ।

(ट) भारतवासी तत्पुरुष समास है।

(ठ) अत्युक्ति – उक्ति ।

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

ईश्वर का एक नाम दीनबंधु है । यदि हम वास्तव में आस्तिक हैं, ईश्वर भक्त हैं तो हमारा यह पहला धर्म है कि दीनों को प्रेम से गले लगाएँ, उनकी सहायता करें, उनकी सेवा-सुश्रूषा करें । तभी तो दीनबंधु ईश्वर हम पर प्रसन्न होगा । पर हम ऐसा कब करते हैं ? आज हम दीन-दुर्बलों को ठुकरा-ठुकरा कर ही आस्तिक या दीनबंधु भगवान के भक्त बने बैठे हैं । दीनबंधु की ओट में हम दीनों को खूब सता रहे हैं । कैसे अद्वितीय आस्तिक हैं हम ! न जाने क्या समझकर हम अपने कल्पित ईश्वर का नाम दीनबंधु रखे हुए हैं, क्यों इस नाम से उस लक्ष्मीकांत का स्मरण करते हैं ।

यह हमने सुना अवश्य है कि त्रिलोकेश्वर श्रीकृष्ण की मित्रता और प्रीति सुदामा नाम के एक दीन-दुर्बल ब्राह्मण से हुई थी । यह भी सुना है कि भगवान यदुराज ने महाराज दुर्योधन का अतुल आतिथ्य अस्वीकार कर बड़े प्रेम से गरीब विदुर के यहाँ साग-भाजी का भोग लगाया था । पर यह बात कुछ चित्त में बैठती नहीं है । रहा हो कभी ईश्वर का दीनबंधु नाम । पुरानी सनातनी बात है,

कौन काटे पर हमारा भगवान दीनों का भगवान नहीं है । हरे, हरे ! वह उनकी घिनौनी कुटिया में रहने जाएगा ? वह रत्न-जड़ित सिंहासन पर विराजने वाला ईश्वर उन भुक्खड़ कंगालों के कटे-फटे कंबलों पर बैठने जाएगा ? वह मालपुआ, मोहनभोग पाने वाला भगवान उन भिखारियों की रूखी-सूखी रोटी खाने जाएगा ? कभी नहीं हो सकता, हम अपने बनवाये हुए विशाल राजमंदिर में उन दीन-दुर्बलों को आने भी न देंगे । उन पतितों और अछूतों की छाया तक हम अपने खरीदे हुए विशिष्ट ईश्वर पर न पड़ने देंगे । दीन-दुर्बल भी कहीं ईश्वर भक्त होते हैं ? किसानों और मजदूरों की टूटी-फूटी झोपड़ियों में ही प्यारा गोपाल वंशी बजाता मिलेगा । वहाँ जाओ और उसकी मोहिनी छवि निरखो । जेठ-बैशाल की कड़ी धूप में, मजदूर के पसीने की टपकती हुई बूँदों में उस प्यारे राम को देखो । किसी धूल भरे हीरे की कनी में उस सिरजनहार को देखो । जाओ, पतित पददलित अछूत की छाया में उस लीला-बिहारी को देखो ।

तुम न जाने उसे कहाँ खोज रहे हो ! अरे भाई, यहाँ वह कहाँ मिलेगा ? अरे इस सब चटक-मटक में वह कहाँ ? वह तो दुखियों की आह में मिलेगा । गरीबों की भूख में मिलेगा । दीनों के दुख में मिलेगा । तो तुम वहाँ खोजने जाते नहीं । यहाँ व्यर्थ फिरते हो ।

प्रश्न

(क) इस गद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए । 1

(ख) 'दीनबंधु' का क्या अर्थ है ? 1

(ग) आस्तिक व्यक्ति का पहला धर्म क्या है ? 1

(घ) दीनबंधु की ओट में हम क्या कर रहे हैं ? 1

(ङ) हमने क्या सुन रखा है ? 1

(च) धनी लोग ईश्वर के बारे में क्या सोचते हैं ? 1

(छ) ईश्वर के दर्शन कहाँ हो सकते हैं ? 1

(ज) इस गद्यांश से दो व्यक्तिवाचक संज्ञा चुनकर लिखिए । 1

उत्तर (क) शीर्षक - ईश्वर के भक्त कौन?

(ख) दीनबंधु का अर्थ है - गरीबों का भाई या उनसे आत्मीयता का भाव रखने वाला।

(ग) आस्तिक व्यक्ति का पहला धर्म यह है कि दीनों को प्रेम से गले लगाएँ, उनकी सहायता करें, सेवा - सुश्रूषा करें।

(घ) दीनबंधु की ओट में हम दीनों को खूब सता रहे हैं।

08

(ङ) हमने यह सुन रखा है कि त्रिलोकेश्वर श्रीकृष्ण की मित्रता एक दीन-दुर्बल ब्राह्मण सुदामा के साथ थी।

(च) धनी लोग ईश्वर के बारे में सोचते हैं कि ईश्वर सिर्फ धनी लोगों के हैं, गरीबों के नहीं।

(छ) ईश्वर के दर्शन दुखियों का आह और गरीबों की भूख में हो सकते हैं।

(ज) व्यक्तिवाचक संज्ञा — सुदामा, विदुर।

खण्ड - ख

प्रश्न 3. दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध लिखें : 10

(क) बिरसा मुण्डा :

(संकेत बिन्दु – परिचय, बचपन एवं शिक्षा, कार्य एवं उपदेश, अँगरेजों का विरोध, उपसंहार)

(ख) राष्ट्रीय एकता :

(संकेत बिन्दु – भूमिका, एकता से लाभ, अनेकता के कारक, राष्ट्रीय एकता का महत्व, उपसंहार)

(ग) वन-संरक्षण :

(संकेत बिन्दु – भूमिका, वृक्ष प्रकृति का सुन्दर उपहार, वृक्षों से लाभ, वनों का संरक्षण आवश्यक है, उपसंहार)

उत्तर (क) बिरसा मुण्डा

08

परिचय :- झारखण्ड के राँची जिले में एक आदिवासी समुदाय रहता है। इसे मुण्डा समुदाय कहा जाता है। बिरसा मुण्डा, इस समुदाय के महान क्रांतिकारी योद्धा थे। यह समुदाय इन्हें भगवान की तरह पूजता है। बिरसा मुण्डा का जन्म राँची जिले के उलीहातू गाँव में 15 नवम्बर 1875 ई० को हुआ। वे बाल्यावस्था से ही बड़े चंचल थे।

बचपन एवं शिक्षा :- वे बचपन से ही जिज्ञासु स्वभाव के थे। उनकी शिक्षा प्रारंभिक चाईबासा के विद्यालय में हुई। वे उच्चतर शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। उनका स्वभाव किसी महापुरुष से कम नहीं था। वे बड़ों का खूब आदर करते थे, उनकी आज्ञा का पालन करते थे। वे मिलनसार स्वभाव के थे। सभी से प्रेम करते थे।

कार्य एवं उपदेश :- बिरसा मुण्डा बाल्यावस्था से ही बड़े-बड़े महान कार्य करते थे। उनमें युग युग का बदलाव बदलने की ताकत थी। बचपन से ही अपने मित्रों को उपदेश देने लगे थे। पशुओं को चराने के दौरान अपने मित्रों को अच्छी-अच्छी बातें बताते थे। जैसे-जैसे वे बड़े होते गए उनके उपदेश भी बढ़ते गए। वे लोगों को शराब न पीने की शिक्षा देते थे और स्वयं भी नहीं पीते थे। व्यर्थ के खर्च के खिलाफ उनका उपदेश लोगों को काफी प्रभावित करता था। वे आदिवासी लोगों को माँस-मछली न खाने की बात बताते थे और वे खुद भी नहीं खाते थे। वे सभी से करुणापूर्ण व्यवहार की शिक्षा देते थे।

अँग्रेजों से संघर्ष :- बिरसा मुण्डा झारखंड राज्य के महान क्रांतिकारियों में से एक हैं। जमीन की ठिकेदारी को लेकर बिरसा मुण्डा का अंग्रेजों के साथ झगड़ा हो गया। मुण्डा जी ने आदिवासियों को संगठित किया। 'माइल' पहाड़ी पर अँग्रेजों और आदिवासियों के बीच भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में आदिवासियों की हार हुई। बिरसा मुण्डा को जेल में डाल दिया गया। जेल से निकलने के बाद बिरसा मुण्डा ने अँग्रेजों पर फिर आक्रमण किया। वे फिर पकड़े गए, उन्हें कैद कर लिया गया।
जेल में उनका स्वास्थ्य खराब हो गया और 9 जून 1900 ई० को उनकी मृत्यु हो गई।

उपसंहार :- बिरसा मुण्डा झारखण्ड के महान आंदोलनकारी रहे हैं। आज वे हमारे मध्य नहीं हैं फिर भी उनके आदर्श हमारे बीच हमेशा रहेंगे। जो समय-समय पर हमें प्रेरणा देते रहेंगे।

प्रश्न 4. झारखण्ड के किसी ऐतिहासिक स्थल का वर्णन करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए । 5

अथवा

विगत कुछ दिनों से आपके क्षेत्र में अपराध बढ़ गये हैं । उनके नियंत्रण हेतु थाना प्रभारी को एक पत्र लिखिए ।

उत्तर

अथवा।

सेवा में,
थाना प्रभारी
अनगड़ा, राँची ।

विषय – बढ़ते अपराध के संबंध में ।

महाशय,

मैं गोन्दली पोखर क्षेत्र का स्थाई निवासी हूँ। विगत कुछ दिनोंसेमैं क्षेत्र में देख रहा हूँ कि किसी तरह कानून व्यवस्था की स्थिति बिगड़ती से जा रही है। छोटे-मोटे अपराध तो रोजमर्रा की जिन्दगी में दिखाई देते हैं। लेकिन इन दिनों ये अपराध बड़े होते जा रही हैं।

कुछ दिनों पहले इस क्षेत्र में दबंगों ने एक व्यक्ति से पैसे लूट लिए और उसे दौड़ा-दौड़ा कर गोली मार दी। चोरी, लूट, बैंकों की लूट, बलात्कार आदि घटनाएँ अब आम होने लगी हैं।

अपराधों की जानकारी पुलिस प्रशासन को मिलती है। परंतु वह हर बार देर से पहुँचती है। अपराधी के विरुद्ध बीना

05

किसी सपूत के वापस चली भी जाती है। कई निवासी बढ़ते अपराध के कारण यहाँ से पलायन कर चुके हैं। इस क्षेत्र में आजकल कोई भी सुरक्षित नहीं है।

आशा है आप इस क्षेत्र में अपराधों के नियंत्रण हेतु शीघ्र कार्रवाही करेंगे ताकि हम निवासी सुख की जिन्दगी जी सकें।

शीघ्र कार्रवाही की आशा के साथ।

धन्यवाद,

भवदीय
गोन्दली पोखर
निवासी

खण्ड - ग

प्रश्न 5. वाक्य में प्रयुक्त क्रिया पदों को छाँट कर लिखिए :

(क) गाड़ी दौड़ रही है । 1

(ख) तुम कविता पढ़ रहे हो । 1

(ग) बच्चा गाय का दूध पीता है । 1

उत्तर (क) क्रिया पद – दौड़ रही है ।

(ख) क्रिया पद – पढ़ रहे हो ।

(ग) क्रिया पद – पीता है ।

03

प्रश्न 6. रिक्त स्थानों की पूर्ति अव्यय पदों से कीजिए :

(क) मैं उसके विचार से ..... सहमत हूँ । 1

(ख) ..... बोलो, कोई सुन लेगा । 1

(ग) वह ..... आलोचना ही करता है । 1

उत्तर (क) मैं उसके विचार से पूर्णतः सहमत हूँ ।

03

(ख) धीरे बोलो, कोई सुन लेगा ।

(ग) वह हमेशा आलोचना ही करता है ।

प्रश्न	7.	निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : (क) रचना की दृष्टि से वाक्य के भेदों के नाम लिखिए । 1 (ख) मेरे स्टेशन पहुँचने के पहले ही गाड़ी छूट चुकी थी । (मिश्र वाक्य में बदलें) 1 (ग) हमारा उद्देश्य रहता है कि हम आत्म निर्भर हों । (आश्रित उपवाक्य को अलग कीजिए) 1
उत्तर	(क)	रचना की दृष्टि से वाक्य के भेद — सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य।
	(ख)	जब मैं स्टेशन पहुँचा तब गाड़ी छूट चुकी थी।
	(ग)	आश्रित उपवाक्य — हम आत्म निर्भर हों।
प्रश्न	8.	निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए : (क) मुझसे खेला नहीं जाता । (कर्तृवाच्य में बदलें) 1 (ख) कलाकार मूर्ति बनाता है । (कर्मवाच्य में बदलें) 1 (ग) गर्मी में कैसे सोओगे ? (भाववाच्य में बदलें) 1
उत्तर	(क)	मैं खेल नहीं सकता।
	(ख)	कलाकार के द्वारा मूर्ति बनाई जाती है।
	(ग)	गर्मी में कैसे सोया जाएगा ?
प्रश्न	9.	(क) 'देशभक्त' का समास विग्रह करें । 1 (ख) 'प्रतिदिन' कौन समास है ? 1 (ग) 'अंबर' के दो भिन्न अर्थ लिखिए । 1
उत्तर	(क)	देश का भक्त।
	(ख)	अव्ययीभाव समास।
	(ग)	वस्त्र तथा आकाश।

खण्ड - घ

प्रश्न 10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया ।

आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया ।

जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में ।

अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में ।

उसकी स्मृति पाथेय बनी है, थके पथिक की पंथा की ।

सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की ?

(क) कवि तथा कविता का नाम लिखिए । 1 + 1 = 2

(ख) इस पद्यांश में कवि किस सुख की बातें कह रहे हैं ? 2

(ग) स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है ? 1

(घ) 'कंथा' का यहाँ क्या अर्थ है ? 1

अथवा

माँ ने कहा पानी में झाँककर

अपने चेहरे पर मत रीझना

आग रोटियाँ सेंकने के लिए है

जलने के लिए नहीं

वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह

बंधन हैं स्त्री जीवन के

माँ ने कहा लड़की होना

पर लड़की जैसी दिखाई मत देना ।

(क) कवि तथा कविता का नाम लिखिए । 1 + 1 = 2

(ख) आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना ? 2

(ग) वस्त्र और आभूषण को स्त्री जीवन का बंधन क्यों कहा गया है ? 1

(घ) माँ ने अपनी कन्या को अपने चेहरे पर रीझने के लिए क्यों मना किया ? 1

उत्तर (क) अथवा

कवि का नाम – ऋतुराज ।

कविता का नाम – कन्यादान ।

(ख) माँ ने ऐसा इसलिए कहा होगा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना क्योंकि माँ ने इस कथन से अपनी बेटी को और साहसी और निडर बनाने के लिए कहा है। विवाह के बाद प्राय: स्त्री को आदर्शवाद का मुलम्मा चढ़ा दिया जाता है। काम करने पर भी उस पर अत्याचार किए जाते हैं। उनका शोषण किया जाता है। कई बार उन्हें जला दिया जाता है। माँ, बेटी को ऐसी स्थिति से बचाना चाहती है।

06

(ग) वरन् और आभूषण स्त्री जीवन का बंधन है। स्त्रियों पर आदर्शवाद का ताज चढ़ा दिया जाता है। उसे घर-गृहस्थी तक ही सीमित रखा जाता है। उसे अपनी मर्जी से जीने की आज्ञा नहीं होती।

(घ) माँ ने अपनी कन्या को अपने चेहरे पर रीझने के लिए इसलिए मना किया है क्योंकि यह स्त्री जीवन का छलावा है, वास्तविकता कुछ और है। कई बार उनकी सुंदरता ही उनकी शत्रु बन जाती है।

प्रश्न 11. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $3 \times 3 = 9$

(क) पठित पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें ।

(ख) कवि देव ने 'श्रीब्रजदुलह' किसके लिए प्रयुक्त किया है और उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक क्यों कहा है ?

(ग) बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(घ) संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं का सहयोग करते हैं ?

उत्तर (क) गोपियाँ योग-साधना को निरर्थक मानती हैं। उनके अनुसार जो व्यक्ति योग-साधना में निहित होते हुए प्रेम रूपी आनन्द से वंचित है वह अत्यंत भाग्यहीन है। यह योग-साधना गोपियों को एक ऐसी ककड़ी के समान लगती है जिसे कभी ग्रहण नहीं किया जा सकता। यह योग-साधना उन्हें एक ऐसे रोग के समान लगता है जिसे उन्होंने न तो कभी देखा, न सुना और न ही कभी भोगा है।

गोपियाँ इस योग-साधना को कभी अपनाना नहीं चाहती हैं।

(ख) कवि ने 'श्रीब्रजदूलह' श्रीकृष्ण के लिए प्रयुक्त किया है।
कवि ने श्रीकृष्ण को संसार रूपी मंदिर का दीपक इसलिए कहा है क्योंकि, श्रीकृष्ण ही तो इस सृष्टि के रचयिता हैं और दीपक के समान ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले हैं। जिस तरह एक दीपक अपने चारों ओर प्रकाश फैलाए रहता है, उजाला करता है। उसी प्रकार श्रीकृष्ण भी इस सृष्टि को अंधकार से मुक्ति दिलाकर ज्ञान-प्रकाश चारों ओर फैलाने वाले हैं।

(ग) बच्चे की दंतुरित मुस्कान को देखकर कवि का मन पुलकित हो जाता है। बच्चे की मुस्कान निश्छल और निष्कपट है। कवि के मन में, बच्चे की मुस्कान को देखकर पितृत्व की भावना जाग गई है। उसे ऐसा लग रहा है कि इस गरीब की झोपड़ी में कमल के फूल खिल आए हैं। बबूल के पेड़ से सेफालिका के फूल झड़ने लगे हैं।
बच्चे की निश्छल मुस्कान कवि के मन को हर लेती है।

प्रश्न 12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूरदास के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ लिखिए । 3

(ख) 'फसल' कविता के आधार पर फसल के आवश्यक तत्त्व कौन-कौन से हैं ? 2

अथवा

(क) 'उत्साह' कविता का संदेश क्या है ? 3

(ख) कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है ? 2

उत्तर (क)

अथवा

'उत्साह' कविता एक प्रतीकात्मकता कविता है। कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के मन में बादल को लेकर उत्साह है। यह उत्साह क्रांति आने के कारण भी है। कवि बादल को रिमझिम फुहारें या बरसने के बजाय जोर से गरजने के लिए कहते हैं। वे बादल को इस प्यासी जनता को तृप्ति प्रदान करने के लिए कहते हैं। अर्थात् कवि इस संसार में क्रांति लाने की बात कहते हैं। बादल के गरजने से जल तो बरसता ही है अर्थात् क्रांति का सुखद परिणाम तो मिलता ही है। कवि इस संसार में बदलाव लाने के लिए कहते हैं।

04

(ख) कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात इसलिए कही है क्योंकि इसी से हमारा जीवन चलता है। बीती बातों को याद करना और से वर्तमान से पलायन करना व्यर्थ है। कवि वर्तमान पर ध्यान देने की बात कहते हैं। कवि इस बात की ओर संकेत करते हैं कि हमें कल्पना में नहीं जीना चाहिए। हमें वर्तमान में अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए अड़िग रहना चाहिए और भविष्य की सुध लेनी चाहिए।

प्रश्न 13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

फ़ादर को ज़हरबाद से नहीं मरना चाहिए था । जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था उसके लिए इस ज़हर का विधान क्यों हो ? यह सवाल किस ईश्वर से पूछें ? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था । वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे ? एक लंबी, पादरी के सफ़ेद चोगे से ढकी आकृति सामने है — गोरा रंग, सफ़ेद झाँई मारती भूरी दाढ़ी, नीली आँखें — बाँहें खोल गले लगाने को आतुर । इतनी ममता, इतना अपनत्व इस साधु में अपने हर एक प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था ।

(क) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए । 1 + 1 = 2

(ख) फ़ादर बुल्के के व्यक्तित्व को अपने शब्दों में लिखिए । 2

(ग) ज़हरबाद किस रोग को कहा जाता है ? 1

(घ) 'आस्था' का अर्थ लिखिए । 1

अथवा

संस्कृति के नाम से जिस कूड़े-करकट के ढेर का बोध होता है, वह न संस्कृति है न रक्षणीय वस्तु । क्षण-क्षण परिवर्तन होनेवाले संसार में किसी भी चीज़ को पकड़कर बैठा नहीं जा सकता । मानव ने जब-जब प्रज्ञा और मैत्री भाव से किसी नए तथ्य का दर्शन किया है तो उसने कोई वस्तु नहीं देखी है, जिसकी रक्षा के लिए दलबंदियों की जरूरत है ।

मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है और उसमें जितना अंश कल्याण का है, वह अकल्याणकर की अपेक्षा श्रेष्ठ ही नहीं स्थायी भी है ।

(क) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए । 1 + 1 = 2

(ख) मानव-संस्कृति में कौन-सी चीज स्थायी है और क्यों ? 2

(ग) 'क्षण-क्षण परिवर्तन' द्वारा लेखक ने क्या कहना चाहा है ? 1

(घ) 'प्रज्ञा' और 'मैत्री' का अर्थ लिखिए । 1

उत्तर (क) पाठ का नाम — मानवीय करुणा की ~~द~~ दिव्य चमक ।
लेखक का नाम — सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

(ख) फादर बुल्के का व्यक्ति देवदार वृक्ष के समान विशाल था। वे सभी पर अपना वात्सल्य लुटाते थे। उनकी कृपा की छाया उनके शरण में आए हुए सभी लोगों पर छाई रहती थी। वे अपने लोगों को आशीषों से भर देते थे। उनके चेहरे पर सफेद झलक देती भूरी दाढ़ी थी आँखें नीली थीं बाँहें हमेशा गले लगाने को आतुर दिखती थीं।

(ग) जहरबाद उस रोग को कहते हैं जब व्यक्ति के पूरे शरीर में जहर फैल जाता है। शरीर का आंतरिक भाग विषाक्त हो जाता है।

(घ) आस्था का अर्थ किसी पर अटूट एवं अतुल्य विश्वास होना है। फादर बुल्के को ईश्वर पर गहरी आस्था थी।

प्रश्न 14. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $3 \times 3 = 9$

(क) सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे ?

(ख) बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है । यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

(ग) लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए ।

(घ) बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल-ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है ?

उत्तर

(क) चश्मेवाले के अंदर देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। वह स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले सैनानियों का भर-पूर सम्मान करता था। नेताजी की मूर्ति को बार-बार चश्मा पहनाकर देश के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करता था। 8

वह शारीरिक रूप से अपंग था। इस कारण वह फौज में नहीं जा सकता था। परंतु उसके अंदर देशभक्ति की भावना किसी भी सैनानी या फौजी से कम नहीं थी। वह देश के प्रति त्याग और समर्पण की भावना रखने वाला देशभक्त था। उस कारण सैनानी न होते हुए भी चश्मे-वाले को लोग कैप्टन कहते थे।

(ख) बिना विचार, घटना और पात्रों के भी कहानी लिखी जा सकती है। परंतु उस कहानी में वह प्रभाव नहीं होगा जो विचार और घटनाओं पर आधारित, पात्र और तथ्यों पर आधारित विचारपूर्ण कहानियों में होता है। उस कहानी का पाठक वैसा ही महसूस करेगा जैसे रवीरे को

बड़े यत्न से काटकर, नमक - मिर्च छिड़ छिड़ककर, बीना खाए केवल सूँघकर छोड़ दिया जाए। उस कहानी में कल्पना तत्व की ही प्रधानता रहेगी। उसमें सच्चा यथार्थ या वास्तविकता शामिल नहीं होगी।

(ग) लेखिका की अपने पिता के साथ वैचा टकराहट कई बार होती रही है। उनके विचार आपस में कभी मेल नहीं खाते थे। लेखिका के पिता उसे देश - दुनिया के प्रति जागरूक बनाना चाहते थे। आज़ादी की ललक जगाना चाहते थे, उसके अंदर विद्रोह के बीज बोना चाह थे। परंतु उसे सक्रिय होने नहीं देना चाहते हैं थे। लेकिन लेखिका अपने विचार व्यक्त करना भी चाहती थी। वह स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय योगदान देना चाहती थी। बस यहाँ आकर उनक टकर होती रही।
शादी के मामले में भी पिता जी नहीं चाहते थे कि लेखिका अपनी मर्जी से राजेन्द्र याद से शादी न करे परंतु लेखिका ने ऐसा ही किया।

प्रश्न 15. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) 'एक कहानी यह भी' पाठ का क्या संदेश है ? 3

(ख) बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी ? 2

अथवा

(क) खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे ? 3

(ख) सुषिर-वाद्यों से क्या अभिप्राय है ? 2

उत्तर (क) अथवा

बालगोबिन भगत खेतीबारी से जुड़े हुए एक गृहस्थ थे परंतु उनमें कुछ ऐसी चारित्रिक विशेषताएँ थीं जिनके कारण वे साधु कहलाते थे —

(i) भगत कबीर को अपना साहब मानते थे और उन्हीं के आदर्शों और सिद्धांतों पर चलते थे।

(ii) कबीर के गीतों को गाते थे।

(iii) किसी की चीज़ को नहीं छूते थे।

(iv) किसी से अपशब्द नहीं कहते थे।

(v) सभी से करुणापूर्ण व्यवहार करते थे।

(vi) उनके खेत में जो कुछ पैदा होता उसे सबसे पहले कबीरमठ ले जाते और वहाँ से जो कुछ प्रसाद के रूप में वापस मिलता उसी से गुज़ारा करते।

(ख) सुषिर-वाद्यों से अभिप्राय सुराख वाले वाद्य यंत्रों से है जिन्हें फूक मार कर बजाया जाता है। सुषिर-वाद्यों

में सबसे आकर्षक शहनाई है। इससे निकले स्वर को मंगल-ध्वनि का स्वर कहा जा है। शहनाई को बजाने के लिए रीड का उपयो किया जाता है। वायु की गति को कमी बेश कमी तेज कर स्वर उत्पन्न की जाती है।

प्रश्न 16. नाक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है । यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई है ? लिखिए । 4

अथवा

सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोगों का योगदान होता है ? उल्लेख करें ।

उत्तर

'जॉर्ज पंचम की नाक' शीर्षक पाठ एक व्यंग्य रचना है। नाक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का प्रतीक है। (3)

जॉर्ज पंचम की लाट पर नाक लगाए जाने या न लगाए जाने पर अनेक आंदोलन, तर्क-वितर्क, बहस और चर्चाएँ हुई।

रानी एलिजाबेथ का भारत यात्रा पर आना और जॉर्ज पंचम की लाट की नाक न होना यह प्रतिष्ठा का प्रश्न था। इस पाठ में यह व्यंग्य किया गया है कि यदि जॉर्ज पंचम की लाट की नाक होगी तभी भारत की नाक बचेगी। कर्मचारियों ने कितने मूर्तिकार नियुक्त किए। उन्होंने कितने

प्रयास किए। चालीस करोड़ की आबादी में किसी एक जिन्दा व्यक्ति की नाक काटकर मूर्ति पर लगाकर रानी एलिजाबेथ का मान-सम्मान करना और जिन्दा व्यक्ति की नाक काटना अनुचित और पाप है। अतः शुरू से अंत: तक नाक का प्रश्न मान-सम्मान और प्रतिष्ठा का द्योतक बन जाता है।

प्रश्न 17. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $3 \times 2 = 6$

(क) आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है ?

(ख) अखबारों ने जिन्दा नाक लगने की ख़बर को किस तरह से प्रस्तुत किया ?

(ग) 'कटाओ' पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है । इस कथन के पक्ष में अपनी राय व्यक्त कीजिए ।

(घ) 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा !' का प्रतीकार्थ समझाइए ।

उत्तर

(क) हमारे विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना इसलिए भूल जाता है क्योंकि उसे अपने साथियों के साथ खेलने-कूदने और मौज मस्ती करने का अवसर मिल जाता है। भोलानाथ अपने साथियों के साथ घर के आँगन या आस-पड़ोस में खेलते थे।

06

(ख) अखबारों ने जिन्दा नाक लगने की खब
को इस तरह प्रस्तुत किया —
जॉर्ज पंचम को जिन्दा नाक लगाई गई
है...... यानि ऐसी नाक जो कतई पत्थ
की नहीं लगती।
अखबार, इस अमानवीय कृत्य का वर्णन
कैसे करे, यह समझ नहीं पा रहे थे।
उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे उनकी अप
नाक कट गई हो। अतः वे इस अमानवी
घटना का विरोध कर रहे थे।

(घ) 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!' शीर्ष
पाठ में एक गौनहारिन जो समाज के
श्रेष्ठ समझे जाने वाले हिस्से से तिरस्कृ
है। उसके अंदर देशप्रेम की भावना पर
प्रकाश डाला गया है। इस पाठ में दुल
और टुन्नू के प्रेम का वर्णन है। उनके
प्रेम में कोई वासना नहीं है, बल्कि
टुन्नू उसकी आत्मा अर्थात उसकी गायन
कला की ओर आकर्षित है। दोनों देश
के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिक
निभाते है। इस संघर्ष में टुन्नू की मृत्यु
हो जाती है।